जल पर जीवन निर्भर करता

डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
पुजार गाँव (चन्द्रबदनी)
(उत्तराखंड)

जल पर जीवन निर्भर करता

भर गये सब ताल–तलैय्या,
परेशान सब हो गये भैय्या!
कैसे कर हम स्कूल जायेंगे?
समय पर नहीं पहुंच पायेंगे!
कई दिनों से रूनझुन–रूनझुन,
वर्षा की हम आवाज रहे सुन।
नदी–नाले सभी लबालब,
कौन पार करवायेगा अब?
करने लगे हैं मेंढक टर्र–टर्र,
इधर–उधर फुदक रहा हर।
कागज की बनाकर के नय्या।
तैरा रहे सब बहिन–भैय्या।
रोज स्कूल की चिन्ता सताती,
रात भर मुझे नींद न आती।
बोल मत ऐसा मन्जु रानी!
बहुत जरूरी हमको पानी।
जल पर जीवन निर्भर करता,
प्राणी मात्र के संकट हरता।
करें प्रयास जल बह न पाये,
जितना हो धरती में समाये।
भैय्या की बात सुन मन्जुरानी,
समझी बहुत जरूरी पानी।

जल जीवन का है आधार

जल की महिमा अपरम्पार,
जल जीवन का है आधार।
बिना इसके सब जाते हार,
काम आता है बारम्बार।
रहते जीवित इसके सहारे,
मानव पशु–पक्षी जितने सारे।
पैदा होते फल–अन्न भी तब,
मिलता जल वृक्षों को जब।
जल को मिलता जब है ताप,
तब बन जाता है वह भाप।
भाप गगन में बनता बादल,
बरसाता तब धरती में जल।
बनता बर्फ जल जमता जब,
शुभ्र रंग का हो जाता तब।
जल स्वच्छता बहुत जरूरी,
नही तो जीवन कथा अधूरी।
सीखें इसका संचय करना,
भविष्य में पछताओगे वरना।
मैला–कूड़ा–कचरा न डालें,
स्वच्छ जल में जलचर पालें।
बढ़ते हैं गन्दे जल से रोग,
कर नहीं पाते फिर सुख भोग।
ब्यर्थ में कभी बहायें न पानी,
होती इससे सब लोगों की हानी।
संरक्षण–संवर्धन करें सभी जन,
इसको समझें सर्वश्रेष्ठ धन।